वामन शिवराम आप्टे

संस्कृत-हिन्दी-कोश

छात्र-संस्करण

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
(मानित विश्वविद्यालय)

वामन शिवराम आप्टे

संस्कृत-हिन्दी कोश

(छात्र संस्करण)

(लेखक द्वारा संकलित छन्दः एवं साहित्यिक तथा भारत के प्राचीन साहित्य में प्राप्त भौगोलिक नामों के परिशिष्टों सहित)

****

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
मानित विश्वविद्यालय
(मानवसंसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन)
56–57 इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली – 110058

प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी
कुलपति
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
[illegible]

Prof. Radhavallabh Tripathi
Vice-Chancellor
Rashtriya Sanskrit Sansthan
Deemed University
(Under MHRD, Govt. of India)
56-57 Institutional Area, Janakpuri
New Delhi - 110058

पुरोवाक्

विदन्त्येव विपश्चितो यत्संस्कृतभाषा भारतीयां साहित्यपरम्परां तत्संवलितां प्रज्ञाञ्च सहस्रशो वर्षेभ्यः प्रकाशयन्ती संवर्धयन्ती च राजते। इयं हि भाषा परम्परा प्रज्ञा च प्रतियुगं नवनवमात्मानं प्रस्फुरति समाविष्करोति च। तत्र च वेदाः, शास्त्रीयं वाङ्मयम्, इतिहासः, पुराणानि, काव्यानीत्यनेकरचनाः विकासं गताः। ताश्च परम्परया संरक्षिताश्च। तत्ता आधुनिकशैल्या च संरक्षितुकामं राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानं मुद्रणं, मान्द्रमुद्रिकानिर्माणं, सङ्गणकद्वारा संरक्षणमिति विविधप्रयासैः प्रयतमानं वर्तते। तत्राद्यं स्थानं भजते अध्ययनमध्यापनमिति स्वीयपरिसरेषु यत्र मौखिकपद्धत्या इमाः परम्पराः संरक्ष्यन्ते।

सर्वसाधनसम्पन्नेऽस्मिन्नाधुनिकलोकेऽपि ग्रन्थानां महत्ता न किञ्चिन्न्यूना दृश्यते। तत्र च कारणं सर्वजनसुलभतैव। अत एव संस्थानमपि ग्रन्थप्रकाशनकर्मणि आत्मानं सततं व्यापारयति। न केवलं स्वयं ग्रन्थान् प्रकाशयति अपि तु ग्रन्थप्रकाशनार्थमनुदानमपि दत्त्वा प्रकाशकान् लेखकांश्च प्रोत्साहयति। लोकप्रियग्रन्थमाला, शास्त्रीयग्रन्थमाला, अप्रकाशितग्रन्थप्रकाशनमाला इति विविधग्रन्थमालाः संस्थानेन प्रकाश्यन्ते। ते च ग्रन्था भृशं विद्वल्लोकेन समादृता आद्रियन्ते च। एतदतिरिच्य संस्कृतभाषाध्ययनार्थमपि स्वाध्यायशैल्या विरचिता दीक्षाग्रन्था अपि संस्थानेन प्रकाशिता लोके चिरं प्रतिष्ठां प्राप्नुवन् ये च ग्रन्थाः अनौपचारिकसंस्कृतशिक्षणकेन्द्रेषु आभारतं प्रधानतया पाठ्यन्ते।

एवं प्रकाशितग्रन्था अचिरादेव विद्वत्समाजस्य स्वध्यायरतानां जिज्ञासूनां छात्राणां च कृते सुलभ्या भवन्तीति संस्थानप्रकाशनानां वैशिष्ट्यं प्रयोजनञ्च चरितार्थतां याति। तादृशग्रन्थानां पुनः प्रकाशनायापि संस्थानं कटिबद्धं वर्तते। तत्र क्रमे एष ग्रन्थो विद्वल्लोकेन भृशं समादृतः वामन शिवराम आप्टे कृतः **'संस्कृत हिन्दी कोश'** इति नामकः शब्दकोशः संस्थानस्य पुनर्मुद्रणयोजनान्तर्गततया प्राकाश्यन्नीयते। एषोऽपि ग्रन्थः सर्वैः यथापूर्वं समाद्रियेत इति विश्वसिमि। अस्मिन् पुनर्मुद्रणकर्मणि साहाय्यमाचरितवद्भ्यः सर्वेभ्यः संस्थानस्य अधिकारिभ्यः सम्यङ्मुद्रणार्थं च मुद्रकाय साधुवादान् वितरामि।

राधावल्लभः त्रिपाठी

भूमिका

[कोशकार का प्रथम प्राक्कथन]

यह संस्कृत-हिन्दी कोश जो मैं आज जनसाधारण के सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ, न केवल विद्यार्थी की चिर-प्रतीक्षित आवश्यकता को पूरा करता है, अपितु उसके लिए यह सुलभ भी है। जैसा कि इसके नाम से प्रकट है यह हाई स्कूल अथवा कालिज के विद्यार्थियों की सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तैयार किया गया है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर मैंने वैदिक शब्दों को इसमें सम्मिलित करना आवश्यक नहीं समझा। फलतः मैं इस विषय में वेद के पश्चवर्ती साहित्य तक ही सीमित रहा। परन्तु इसमें भी रामायण, महाभारत पुराण, स्मृति, दर्शनशास्त्र, गणित, आयुर्वेद, न्याय, वेदान्त, मीमांसा, व्याकरण, अलंकार, काव्य, वनस्पति विज्ञान, ज्योतिष, संगीत आदि अनेक विषयों का समावेश हो गया है। वर्तमान कोशों में से बहुत कम कोशकारों ने ज्ञान की विविध शाखाओं के तकनीकी शब्दों की व्याख्या प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हाँ, वाचस्पत्य में इस प्रकार के शब्द पाये जाते हैं, परन्तु वह भी कुछ अंशों में दोषपूर्ण है। विशेष रूप से उस कोश से जो मुख्यतः विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए ही तैयार किया गया हो, ऐसी आशा नहीं की जा सकती। यह कोश तो मुख्य रूप से गद्यकथा, काव्य, नाटक आदि के शब्दों तक ही सीमित है, यह बात दूसरी है कि व्याकरण, न्याय, विधि, गणित आदि के अनेक शब्द भी इसमें सम्मिलित कर लिये गये हैं। वैदिक शब्दों का अभाव इस कोश की उपादेयता को किसी प्रकार कम नहीं करता, क्योंकि स्कूल या कालिज के अध्ययन काल में विद्यार्थी की जो सामान्य आवश्यकता है उसको यह कोश भलीभांति-बल्कि कई अवस्थाओं में कुछ अधिक ही पूरा करता है।

कोश के सीमित क्षेत्र के पश्चात् इसमें निहित शब्द योजना के विषय में यह बताना सर्वथा उपयुक्त है कि कोश के अन्तर्गत, शब्दों के विशिष्ट अर्थों पर प्रकाश डालने वाले उद्धरण, संदर्भ उन्हीं पुस्तकों से लिये गये हैं जिन्हें विद्यार्थी प्रायः पढ़ते हैं। हो सकता है कुछ अवस्थाओं में ये उद्धरण आवश्यक प्रतीत न हों, फिर भी संस्कृत के विद्यार्थी को, विशेषतः आरंभकर्ता को, उपयुक्त पर्यायवाची या समानार्थक शब्द ढूंढने में ये निश्चय ही उपयोगी प्रमाणित होंगे।

दूसरी ध्यान देने योग्य इस कोश की विशेषता यह है कि अत्यन्त आवश्यक तकनीकी शब्दों की, विशेषतः न्याय, अलंकार, और नाट्यशास्त्र के शब्दों की—व्याख्या इसमें यथा स्थान दी गई है। उदाहरण के लिए देखो—अप्रस्तुत प्रशंसा, उपनिषद्, सांख्य, मीमांसा, स्थायिभाव, प्रवेशक, रस, वार्तिक आदि। जहाँ तक अलंकारों का सम्बन्ध है, मैंने मुख्य रूप से काव्य प्रकाश का ही आश्रय लिया है—यद्यपि कहीं-कहीं चन्द्रालोक, कुवलयानन्द और रसगंगाधर का भी उपयोग किया है। नाट्यशास्त्र के लिए साहित्य दर्पण को ही मुख्य समझा है। इसी प्रकार महत्त्वपूर्ण शब्दचय, वाग्धारा, लोकोक्ति अथवा विशिष्ट अभिव्यंजनाओं को भी यथा स्थान रक्खा है, उदाहरण के लिए देखो—गम्, सेतु, हस्त, मयूर, दा, कृ आदि। आवश्यक शब्दों से सम्बद्ध पौराणिक उपाख्यान भी यथा स्थान दिये हैं उदाहरणतः देखो—इंद्र, कार्तिकेय, प्रह्लाद आदि। व्युत्पत्ति प्रायः नहीं दी गई—हाँ अत्यन्त विशिष्ट यथा अतिथि, पुत्र, जाया, हृषीकेश आदि शब्दों में इसका उल्लेख किया गया है। तकनीकी शब्दों के अतिरिक्त अन्य आवश्यक शब्दों के विषय में दिया गया विवरण विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा—उदा० मंडल, मानस, वेद, हंस। कुछ आवश्यक लोकोक्तियाँ 'न्याय' शब्द के अन्तर्गत दी गई हैं। प्रस्तुत कोश को और भी अधिक उपादेय बनाने की दृष्टि से अन्त में तीन परिशिष्ट भी दिये गये हैं। पहला परिशिष्ट

संकेत सूचि

अ०	अव्यय
अक०	अकर्मक
अलु० स०	अलुक् समास
अव्य० स०	अव्ययीभाव समास
आ०	आत्मने पद
उदा०	उदाहरण
उप० स०	उपपद समास
उभ०	उभयपदी
कर्म० स०	कर्मधारय समास
त० स०	तत्पुरुष समास
तृ० त०	तृतीया तत्पुरुष समास
दे०	देखो
द्व० स०	द्वन्द्व समास
द्वि० क०	द्विकर्मक
द्वि० स०	द्विगु समास
द्वि० त०	द्वितीया तत्पुरुष समास
ष० त०	षष्ठी तत्पुरुष समास
न० स०	नञ् समास
तुल०	तुलनात्मक
ना० धा०	नामधातु
सम्प्र०	सम्प्रदान कारक
सम०	समस्त पद
तु०	तुलना करो
प्रेर०	प्रेरणार्थक
ज्यो०	ज्योतिष
उ० अ०	उत्तमावस्था
ए० व०	एक वचन
सा० वि०	सार्वनामिक (निर्देशक) विशेषण
वि०	विशेषण
बी० ग०	बीजगणित
क्रि० वि०	क्रिया विशेषण
वर्त०	वर्तमानकाल
भूत०	भूत काल
प्रा० स०	प्रादि समास
न० ब०	नञ् बहुव्रीहि समास
न० त०	नञ् तत्पुरुष समास
पुं०	पुंल्लिग
नपुं०	नपुंसक लिंग
स्त्री०	स्त्री लिंग
सक०	सकर्मक
पृषो०	पृषोदरादित्वात्
पर०	परस्मैपद
प्या०	प्यामिति
कर्म० वा०	कर्म वाच्य
कर्तृ० वा०	कर्तृ वाच्य
ब० व०	बहु वचन
म० अ०	मध्यमावस्था
अ० पु०	अन्यपुरुष
म० पु०	मध्यम पुरुष
उ० पु०	उत्तम पुरुष
ब० स०	बहुव्रीहि समास
भवि०	भविष्यत्काल
इच्छा०	इच्छार्थक, सन्नन्त
भू० क० कृ०	भूतकालिक कर्मणि कृदन्त (क्त)
सं० कृ०	संभाव्य कृदन्त (तव्यत्)
वर्त० कृ०	वर्तमानकालिक कृदन्त (शत्रन्त या शानजन्त)
विप०	विपरीतार्थक
करण०	करणकारक
कर्तृ०	कर्तृकारक
कर्म०	कर्मकारक
आलं०	आलंकारिक
वार्ति०	वार्तिक
व०	वैदिक
अने० पा०	नाना पाठान्तर
संबो०	संबोधन
यङ०	यङ्लुङन्त
संब०	संबंध
त०	तदेव
श०	शब्दशः
अधि०	अधिकरण कारक
उप०	उपसर्ग
भ्वा०	भ्वादिगण
अदा०	अदादिगण
जु०	जुहोत्यादिगण
स्वा०	स्वादिगण
दि०	दिवादिगण
तु०	तुदादिगण
क्र्या०	क्र्यादिगण
च०	चरादिगण
रु०	रुधादिगण
तना०	तनादिगण

तुवर (वि०) [तु+ष्वरच्] 1. कषाय, कसैला 2. बिना दाढ़ी का (तूवर भी)।

तुष् (दिवा० पर०—तुष्यति, तुष्ट), प्रसन्न होना, सन्तुष्ट होना, परितृप्त होना, खुश होना (प्रायः करण० के साथ)—रत्नैर्महार्हैस्तुतुषुर्न देवाः—भर्तृ० २।८० मनु० ३।२०७, भग० २।५५, भट्टि० २।१३, १५।८, रघु० ३।६२, प्रेर०—तोषयति - ते, प्रसन्न करना, परितुष्ट करना, सन्तुष्ट करन, परि—, परितृप्त होना, प्रसन्न होना, सन्तुष्ट होना—वयमिह परितुष्टा वल्कलैस्त्वं च लक्ष्म्या—भर्तृ० ३।५०, अस्मत्कृते च परितुष्यति काचिदन्या - २।२, सम् -, प्रसन्न होना, परितृप्त होना सन्तुष्ट होना—सन्तुष्टो भार्यया भर्ता भर्त्रा भार्या तथैव च मनु० ३।६०, भर्तृ० ३।५, भग० ३।१७।

तुषः [तुष्+क] अनाज की भूसी,—अजानतार्थं तत्सर्वं (अध्ययनम्) तुषाणां कण्डनं यथा—मनु० ४।७८। सम०—अग्निः—अनलः अनाज की भूसी या बूर की आग,—अम्बु (नपुं०),—उदकम् चावल या जौ की कांजी,—ग्रहः,—सारः आग।

तुषार (वि०) [तुष+आरक्] ठण्डा, शीतल, तुषाराच्छन्न (पाले के कारण शीतल), ओस से युक्त—शि० ९।७, अपां हि तृप्ताय न वारिधारा स्वादुः सुगन्धिः स्वदते तुषारा—नै० ३।९३, —रः 1. कोहरा, पाला 2. बर्फ, हिम—कु० १।६, ऋतु० ४।१ 3. ओस—रघु० १४।८४ श० ५।१९ 4. धुन्द, क्षीणवर्षा, फुहार, ठण्डे पानी की बौछार,—पृक्तस्तुषारैर्गिरिनिर्झराणाम्—रघु० २।१३, ९।६८ 5. एक प्रकार का कपूर। सम०—अद्रिः, —गिरिः,—पर्वतः हिमालय पहाड़—तुषाराद्रिवाताः —मेघ० १०७, -कणः ओस के कण, हिमकण, कुहरा पाला,—कालः सरदी का मौसम,—किरणः, रश्मिः चन्द्रमा,—अमरु ४९, शि० ९।२७,—गौर (वि०) 1. हिम की भांति श्वेत 2. हिम के कारण श्वेत,—रः कपूर।

तुषिताः (ब० व०) [तुष्+कितच्] उपदेवताओं का समूह जो गिनती में १२ या ३६ कहे जाते हैं।

तुष्ट (भू० क० कृ०) [तुष्+क्त] 1. प्रसन्न, तुष्ट, खुश, परितृप्त, परितुष्ट 2. जो कुछ अपने पास हैं उसी से सन्तुष्ट, तथा अन्य के प्रति उदासीन।

तुष्टिः (स्त्री०) [तुष्+क्तिन्] 1. सन्तोष, परितृप्ति, प्रसन्नता, परितोष 2. (सां० द० में) मौन स्वीकृति, प्राप्त वस्तु से अधिक की लालसा न होना।

तुष्टुः [तुष्+तुक्] कर्णमणि कानों में पहनने की मणि

तुस=तुष।

तुहिन (वि०) [तुह्+इनन्, ह्रस्वश्च] ठण्डा, शीतल, —नम् 1. हिम, वर्फ़ 2. ओस, कुहरा तृणाग्रलग्नैस्तुहिनैः पतद्भिः—ऋतु० ४।७, ३।१५ 3. चाँदनी 4. कपूर। सम०—अंशुः,—करः,—किरणः,—द्युतिः, —रश्मिः 1. चन्द्रमा,—शि० ९।३० 2 कपूर, अचलः —अद्रिः,—शैलः हिमालय पहाड़,—रघु० ८।५४,—कणः ओस की बूंद—अमरु ५४,—शर्करा वर्फ़।

तूण् i (चुरा० उभ०—तूणयति—ते) सिकोड़ना, ii (चुरा० आ०—तूणयते) भरना, भर देना।

तूणः [तूण्+घञ्] तरकस—मिलितशिलीमुखपाटलिपटलकृतस्मरतूणविलासे—गीत० १, रघु० ७।५७। सम०—धारः धनुर्धर।

तूणी, तूणीर [तूण+ङीष्, तूण्+ईरन्] तरकस—रघु० ९।५६।

तूवरः [तु+क्विप्, तु+वृ पृषो०] 1. बिना दाढ़ी का मनुष्य 2. बिना सींग का बैल 3. कषाय, कसैला 4. हिजड़ा।

तूर् (दिवा० आ०—तूर्यते, तूर्ण) 1. जल्दी से जाना, शीघ्रता करना 2. चोट पहुँचाना, मारना।

तूरम् [तूर्+घञ्] एक प्रकार का वाद्ययन्त्र।

तूर्ण (वि०) [त्वर्+क्त, ऊठ्, तस्य नत्वम्] फुर्तीला, तेज, शीघ्रकारी 2. द्रुतगामी, बेड़ा,—र्णः फुर्ती, शीघ्रता, —र्णम् (अव्य०) फुर्ती से, जल्दी से—चूर्णमानीयतां तूर्णं पूर्णचन्द्रनिभानने—सुभाष०।

तूर्यः,—र्यम् [तूर्यते ताड्यते तूर्+यत्] एक प्रकार का वाद्य यन्त्र, तुरही—मनु० ७।२२५, कु० ७।१०। सम० - ओघः उपकरणों का समूह।

तूलः,—लम् [तूल्+क] रूई,—लम् 1. पर्यावरण, आकाश, वायु 2. घास का गुच्छा 3. शहतूत का पेड़,—ला 1. कपास का पेड़ 2. लैम्प की बत्ती,—ली 1. रूई 2. दीवे की बत्ती 3. जुलाहे का ब्रुश या कूची 4. चित्रकार की कूची या तूलिक 5. नील का पौधा। सम०—कार्मुकम् —धनुस् धुनकी, अर्थात् रूई पीनने की धनुही,—पिचुः रूई,—शर्करा बिनौला रूई के पौधे का बीज।

तूलकम् [तूल+कन्] रूई।

तूलिः (स्त्री०) [तूल्+इन्] चितेरे की कूची।

तूलिका [तूलि+कन्+टाप] चित्रकार की कूची, लेखनी, —उन्मीलितं तूलिकयेव चित्रम्—कु० १।३१ 2. रूई की बत्ती (दीपक के लिए अथवा उबटन आदि लगाने के लिए) 3. रूई भरा गद्दा 4. बर्मा, छेद करने की सलाख।

तूष्णीक (वि०) [तूष्णीम्+क, मलोपः] चुप रहने वाला, मौनी, स्वल्पभाषी।

तूष्णीम् (अव्य०)[तूष्+नीम् बा०] नीरवता में चुपचाप, चुपके से, विना बोले या विना किसी शोरगुल के—किं भवांस्तूष्णीमास्ते—विक्रम० २, न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह—भग० २।९। सम०—भावः नीरवता, निस्तब्धता, —शील: खामोश, स्वल्पभाषी या मौनी।

तूस्तम् [तूस्+तन्, दीर्घः] 1. जटा 2. धूल 3. पाप 4. कण, सूक्ष्म जर्रा।

तृंह् (तुदा० पर०—तृंहति) मारना, चोट पहुँचाना—दे० तृह्।

तृणम् [तृह्+क्न, हलोपश्च] 1. घास—किं जीर्णं तृणमत्ति मानमहतामग्रेसरः केसरी—भर्तृ० २।२९ 2. घास की पत्ती, सरकण्डा, तिनका 3. तिनकों की बनी कोई चीज (जैसे बैठने की चटाई), तुच्छता के प्रतीक रूप में प्रयुक्त—तृणमिव लघुलक्ष्मीर्नैव तान्संरुणद्धि—भर्तृ० २।१७, दे० 'तृणीकृ' भी। सम०—अग्निः 1. भुस या तिनकों की आग—मनु० ३।१६८ 2. जल्दी बुझ जाने वाली आग,—अञ्जनः गिरगिट,—अटवी ऐसा जङ्गल जिसमें घास की बहुतायत हो,—आवर्तः हवा का बवण्डर, भभूला, —असृज् (नपुं०),—कुङ्कुमम्, —गौरम् एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य,—इन्द्रः ताड़ का वृक्ष,—उल्का तिनकों की मशाल, फूंस की आग की लौ,—ओकस् (नपुं०) फूंस की झोपड़ी,—काण्डः,—कूटम् घास का ढेर,—कुटी—कुटीरकम् घास फूंस की कुटिया —केतुः ताड़ का वृक्ष,—गोधा एक प्रकार की गिरगिट, गोह, -ग्राहिन् (पुं०) नीलम, नीलकान्त मणि, —चरः गोमेद, एक प्रकार का रत्न,—जलायुका, —जलूका तितली का लार्वा, -द्रुमः 1. ताड़ का वृक्ष, खजुर 2. नारियल का पेड़ 3. सुपारो का पेड़ 4. केतकी का पौधा 5. छुहारे का वृक्ष,—धान्यम् जङ्गली अनाज जो बिना बोये उगे,—ध्वजः 1. ताड़ का वृक्ष 2. बांस, —पीडम् दस्त-ब-दस्त लड़ाई, —पूली चटाई, सरकण्डो का बना मूढ़ा—प्राय (वि०) तिनके के मूल्य का, निकम्मा, नगण्य,—बिन्दुः एक ऋषि का नाम—रघु० ८।७९,—मणिः एक प्रकार का रत्न (अम्बर, राल), —मत्कुणः अमानत या जामिन प्रतिभू (सम्भवतः 'ऋणमत्कुण' का अशुद्ध पाठ), —राजः 1. नारियल का पेड़ 2. बांस 3. ईख, गन्ना 4. ताड़ का पेड़—वृक्षः 1. ताड़ का पेड़, खजूर का वृक्ष 2. छुहारे का वृक्ष 3. नारियल का पेड़ 4. सुपारी का पेड़,—शीतम् एक प्रकार का सुगन्धित घास,—सारा केले का पेड़,—सिंहः कुल्हाड़ा,—हर्म्यः घास फूंस का बना घर।

तृण्या [तृण+य+टाप्] घास का ढेर।

तृतीय (वि०) [त्रि+तीय, संप्र०] तीसरा,—यम् तीसरा भाग। सम०—प्रकृतिः (पुं०, स्त्री०) हीजड़ा।

तृतीयक (वि०) [तृतीय+कन्] प्रति तीसरे दिन होने वाला, (बुखार) तैया।

तृतीया [तृतीय+टाप्] 1. चांद्र पक्ष का तीसरा दिन, तीज 2. (व्या० में) करण कारक या उसके विभक्ति-चिह्न। सम०—कृत (वि०) (खेत आदि) तीन बार जोता गया,—तत्पुरुषः करणकारक का समास, —प्रकृतिः (पुं० स्त्री०) हीजड़ा।

तृतीयिन् (वि०) [तृतीय+इनि] तीसरे अंश का अधिकारी (भाग का)।

तृद् (भ्वा० पर०, रुधा० उभ० तर्दति, तृणत्ति, तृन्ते, तृण्ण) 1. फाड़ना, खण्डशः करना, चीरना 2. मार डालना, नष्ट करना, सहार करना—भट्टि० ६।३८, १४।१०८, १५।३६, ४४ 3. मुक्त करना 4. अपमान करना।

तृप् i (दिवा०, स्वा०, तुदा० पर० तृप्यति, तृप्नोति, तृपति, तृप्त) 1. सतुष्ट होना, प्रसन्न होना, परितुष्ट होना —अथ तप्स्यन्ति मांसाशाः—भट्टि० १६।२९, प्राशीत्पातृपत् क्रूरः—१५।२९, (प्रायः करण० के साथ परन्तु कभी-कभी संब० या अधि० के साथ भी)—कोऽतृप्यति वित्तेन—हि० २।१७४, तृप्तस्तस्मिन्पिबितेन—भर्तृ० २।३४, नाग्निस्तृप्यति काष्ठानां नापगानां महोदधिः नातक्रः सर्वभूतानां न पुंसां वामलोचनाः—पंच० १।१३ तस्मिन्हि तत्पुरुषास्तते यज्ञे—महा० 2. प्रसन्न करना, परितृप्त करना,—प्रेर० परितृप्त करना, प्रसन्न करना —इच्छा० तितृप्सति, तितर्पिषति, ii (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०—तर्पति, तर्पयति—ते) 1. जलाना, प्रज्वलित करना 2. (आ०) सन्तुष्ट होना।

तृप्त (वि०) [तृप्+क्त] संतृप्त, सतुष्ट, परितुष्ट।

तृप्तिः (स्त्री०) [तृप्+क्तिन्] संतोष, परितोष, रघु० २।३९, ७३, ३।३ मनु० ३।२७१, भग० १०।१८ 2. अतितृप्ति, ऊब 3. प्रसन्नता, परितुष्टि।

तृष् (दिवा० पर० तृष्यति, तृषित) 1. प्यासा होना,—भट्टि० ७।१०६, १४।३०, १५।५१ 2. कामना करना, लालायित होना, उत्सुक या उत्कंठित होना।

तृष् (स्त्री०) [तृष्+क्विप्] (कर्तृ० ए० व०—तृट्—ड्) 1. प्यास—तृषा शुष्यत्यास्ये पिबति सलिलं स्वादु सुरभि—भर्तृ० ३।९२, ऋतु० १।११ 2. लालसा, उत्सुकता।

तृषा—दे० तृष्। सम०—आर्त (वि०) प्यास से व्याकुल, प्यासा,—हम् पानी।

तृषित (भू० क० कृ०) [तृष्+क्त] 1. प्यासा—[illegible] ९, ऋतु० १।१८ 2. लालची, प्यासा, लाभ का इच्छुक।

तृष्णज् (वि०) [तृष्+नजिङ्] लोभी, लालची, प्यासा।

तृष्णा [तृष्+न+टाप् किच्च] 1 प्यास (शा० [illegible] आलं०)—तृष्णा छिनत्त्यात्मनः हि० १।१७१, [illegible] १।१५ 2. इच्छा, लालसा, लालच, लोभ, [illegible] —तृष्णां छिन्धि भर्तृ० २।७७, ३।५, रघु० ८।[illegible] सम०—क्षयः इच्छा का नाश, मन की शान्ति, संतोष

तृष्णालु (वि०) [तृष्णा+आलु] बहुत प्यासा।